# राज्य अध्याय 19

| | |
|---|---|
| 1 | **प्रार्थना करना** |

***समूह का अगुवा।*** अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

| | |
|---|---|
| 2 | **साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 16,18,19 और 22** |

***अपनी बारी*** आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 16,18,19 और 22) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| | |
|---|---|
| 3 | **स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(6) रोमियों 4:5** |

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।

**(6) रोमियों 4:5।** परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।

| | |
|---|---|
| 4 | **शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **भला सामरी** |

**लूका 10:29-37 में दिया गया दृष्टान्त भले सामरी का दृष्टान्त है जो**

**परमेश्वर के राज्य में प्रगट होने वाले प्रेम को दर्शाता है।**

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

***पढ़ें*** लूका 10:25-37

## 1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

***परिचय।*** दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

***चर्चा करें।*** कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

***ध्यान दें।***

**यरीहो और यरूशलेम के बीच सड़क।** यरूशलेम पहाड़ की चोटी पर बसा हुआ है, जबकि यरीहों वहां से 27 किमी की दूरी पर 1200 मीटर गहरी घाटी में बसा हुआ है। इन दोनों के बीच में बनी हुई सड़क बहुत उबड़ खाबड़ और बहुत एकान्त थी। ज्यादातर डाकू और अपराधी उस इलाके में पायी जाने वाली गुफाओं में ही रहा करते थे। वह एक खतरनाक सड़क के रूप में जानी जाती थी।

वह व्यक्ति यरूशलेम से यरीहो की ओर जा रहा था। यह व्यक्ति एक यहूदी था; नहीं तो यीशु ने ऐसा नहीं कहा होता। डाकुओं ने उस पर आक्रमण किया, उसके सारे समान को लूट लिया, और उसे अधमरा छोड़कर चले गये।

**याजक और लेवी।** यरीहो में बहुत से याजकों के परिवार रहा करते थे इसलिए प्रायः वे यरूशलेम और यरीहो के बीच में यात्रा किया करते थे। यह याजक नीचे की ओर जा रहा था, इसका अर्थ है कि वह शायद यरूशलेम में अपने याजकीय कार्य को समाप्त करने के बाद में अपने घर जा रहा था। उसने इस व्यक्ति को सड़क पर पड़े हुए देखा,लेकिन वह उसे देखकर आगे बढ़ गया। वह उस मसले में अपना हाथ डालना नहीं चाहता था। हो सकता है कि बहुत से बहाने उसके मन में आये हो जैसे कि,“ यह आदमी हम याजकों के समाज में से नहीं हैं!” “मैं इस अशुद्ध व्यक्ति के सम्पर्क में आने से अशुद्ध हो जाऊंगा।” हालांकि उसके पास बहाना बनाने के लिए कोई बहाना नहीं था क्योंकि पुराने नियम में स्पष्ट तौर पर परदेशियों पर और यहां तक कि शत्रुओं पर भी दया करने के लिए आदेश दिया गया है (लैव्य 19:34; निर्गमन 23:4–5; 2 राजा 6:8–23)।

लेवी, जिसका काम मन्दिर के कामों में याजक की मदद करना था, वह भी बिना उस व्यक्ति पर दया किये हुए चला गया। हालांकि उसके पास भी इस कर्तव्य को निभाने से मना करने हेतू कोई बहाना नहीं, जिसके तहत वह उस असहाय व्यक्ति पर दया कर सकता था।

**सामरी वासी।** सामरी और यहूदी आपस में दुश्मन थे और एक दूसरे को नफरत किया करते थे (यूहन्ना 4:9; 8:48; लूका 9: 51–56)। कोई भी जन अपेक्षा नहीं कर सकता है कि कोई सामरी किसी यहूदी की मदद करेगा। लेकिन इस मामले में बिल्कुल ऐसा ही हुआ। जब उस सामरी ने यहूदी को सड़क पर पड़े हुए देखा, उसने उस पर तरस खाया। उसने दाखरस से उस घायल व्यक्ति के जख़्मों को साफ किया, जो कि किटाणु विनाशक के रूप में काम करता है( 1तीमुथीयुस 5:23), उसके बाद उसने उस पर तेल मला जो मरहम के समान काम करता है (यशायाह 1:6)। उसने उस घायल को अपने गदहे पर लादा और सम्भवतः वह गदहें के साथ साथ घायल को पकड़ कर उसे सराय तक ले गया। सराय में पहुंचकर उसने यह नहीं सोचा कि उसका काम अब खत्म हो गया है, परन्तु उसने निजी तौर पर उस घायल व्यक्ति की रात भर देखभाल की। और अगले दिन भी, उसने ऐसा नहीं सोचा कि उसका काम खत्म हो गया है, लेकिन उसने सराय के मालिक को इतना पैसा

दिया जिससे कुछ दिनों तक उसे व्यक्ति की देखभाल की जा सकती थी। वरन उसने यह भी वायदा किया कि उस पर होने वाले अतिरिक्त को वह आकर भर देगा।

---

## 2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

***परिचय।*** दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और " व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है, कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

***खोजें व चर्चा करें।*** दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

***ध्यान दें।***

### (1) इस दृष्टान्त का उल्लेख हम लूका 10: 25-29 में पाते हैं।

**यहां पर प्रश्न यह था कि अनन्त जीवन को किस तरह से प्राप्त किया जा सकता है।** पुराने नियम की व्यवस्था के एक ज्ञाता ने यीशु को लज्जित करने की कोशिश की। वह सब को यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि यीशु कठिन प्रश्नों के जवाब नहीं दे सकता है। उसका प्रश्न किसी के लिए भी उत्तर देने के लिए अति कठिन प्रश्न था, "अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूं?" वह शास्त्री स्वयं इस बात को जानता था कि सही उत्तर था कि: " अनन्त जीवन पाने के लिए, मनुष्य को व्यवस्था का पालन करना चाहिए।"

उसे उत्तर देने की बजाय यीशु ने उल्टा उससे एक प्रश्न पूछा, " व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" इस तरह से यीशु ने तख्ता पलट दिया और उसे अपने जी सवाल का जवाब देने के लिए मज़बूर कर दिया। ऐसा करने के द्वारा, यीशु ने सभी को यह भी दिखाने का प्रयास किया कि वह कोई नयी शिक्षा नहीं दे रहा था, वरन वह बहुत गम्भीरता के साथ परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था को पालन कर रहा था (अर्थात बाइबल में पाये जाने वाले प्रकाशन का पालन)।

**बाइबल में पाया जाने वाला उत्तर परमेश्वर और पड़ोसियों को सिद्ध प्रेम करना है।** शास्त्री के द्वारा दिया गया उत्तर व्यवस्थाविरण 6:5 और लैव्यवस्था 19:18 का पूरी तरह से दोहराव था। यह अनुच्छेद बताता है कि एक सच्चे धर्म का वास्तविक अर्थ परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करना है। हर एक जन को अपने पूरे मन और अपनी पूरी योग्यता के साथ परमेश्वर को प्रेम करना चाहिए। और जब कोई अपने पड़ोसी से प्रेम करे तो वह बिल्कुल वैसा ही होना चाहिए जैसा ,कि वह अपने आप से प्रेम करता है (मरकुस 12:30-31)! फिर यीशु ने उस से कहा, "ऐसा ही कर और तू जीवित रहेगा।" यीशु का मतलब था कि, "यदि तू इस नियम का ईमानदारी के साथ पालन करेगा, अर्थात, यदि तू परमेश्वर और अपन पड़ोसी से प्रेम करेगा, तो तू अनन्त जीवन का वारिस होगा।"

यहां पर समस्या उस ईश्वरीय सिद्धान्त में नहीं है जिसके अनुसार आज्ञाकारिता का परिणाम अनन्त जीवन होता है (लैवव्यवस्था 18:5; गलातियों 3:12), या सिद्ध प्रेम से अनन्त जीवन प्राप्त होता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि, <u>जगत की उत्पत्ति से लेकर आज तक यीशु को छोड़कर कोई ऐसा जन पैदा ही नहीं हुआ है जो पूरी तरह से आज्ञा पालन कर सके या सिद्धता के साथ प्रेम कर सके!</u> इस शास्त्री के साथ में समस्या यह थी कि वह अभी भी यह विश्वास करता था कि वह अपनी

अपूर्ण या *सिद्धताहीन* आज्ञाकारिता के द्वारा अनन्त जीवन को *हासिल* कर सकता है। वह इस बात को बिल्कुल नहीं समझा था कि वह "आत्मिकता हीन प्राणी है, जो पापों कें हाथों गुलाम के रूप में बिका हुआ है (रोमियों 7:14)! उसे बिल्कुल विश्वास नहीं था कि, "कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं(रोमियों 3:10)। यदि वह अपने गुनाहों व अपने पापी स्वभाव को पहिचानकर पुकारता, "पिता मुझ पापी पर दया कर"(लूका 18:13)! तब निश्चय ही यीशु ने उसे सुसमाचार( मत्ती 11:28) पर विश्वास करने के लिए आमन्त्रित किया होता! लेकिन उस शास्त्री की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि उसने अपने आप को बहुत अधिक बुद्धिमान दिखाने का प्रयास किया और वह सारे लोगों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराने का प्रयास कर रहा था।

**इस बारे में प्रश्न कि मेरा पड़ोसी कौन है।** यहूदियों में इस प्रश्न "मेरा पड़ोसी कौन है?" के जवाब में बहुत अलग अलग विचार मौजूद थे। बहुत से ऐसे लोगों ने प्रभु की आज्ञा को दूषित करके नये धारणा को क्रियान्वित कर दिया था जिसके अनुसार " तुम अपन पड़ोसी से प्रेम करो लेकिन अपने शत्रु से बैर।" यीशु ने मत्ती 5:43-48 में इस विचार धारा का खण्डन किया।

आम तौर पर लोगों के द्वारा स्वीकृत धारणा यह थी कि, "अपने पड़ोसी अर्थात इस्राएलियों को प्रेम करो", इसका अर्थ है, "अपने देश और अपने समाज के लोगों को प्रेम करो।"

और फरीसियों ने इसे और भी क्षीण बना दिया," अपने पड़ोसी अर्थात केवल फरीसी को ही प्रेम करो।" अर्थात, "केवल अपनी पार्टी और अपने समूह के लोगों से ही प्रेम करो।"[1] वे बाकि के सभी लोगों को तुच्छ समझा करते थे और आम लोगों को श्राप दिया करते थे, जो लोग उनकी नज़रों में व्यवस्था का पालन नहीं किया करते थें (यूहन्ना 7:49)। कुमरान में पायी जाने वाला यहूदी समाज इस बात का दावा करता है कि यदि कोई भी उनके छोटे समूह कुमरान का हिस्सा नहीं है वह "अन्धकार की सन्तान है" और उसे नफरत की जानी चाहिए।

अतः, इस प्रश्न के द्वारा " मेरा पड़ोसी कौन है?" यह व्यवस्थापक अपने विवेक को स्थिर करना और सारे लोगों के सामने यीशु को नीचा दिखाना चाहता था।

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त कहा।

**(2) यह दृष्टान्त लूका 10:30-35 में पाया जाता है।**

**(3) दृष्टान्त की व्याख्या लूका 10:36-37 में पायी जाती है।**

---

## 3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

***परिचय।*** यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

---

[1]या अपनी कलीसिया संप्रदाय

***खोजें और चर्चा करें।*** इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं? ***ध्यान दें।***

### (1) दृष्टान्त का इस्तेमाल एक रूपक के रूप में करना।

निम्नलिखित चार मसीहियों ने बहुत अच्छी बातों को लिखा, लेकिन उन्होनें इस दृष्टान्त का इस्तेमाल "रूपक" के रूप में किया और बहुत सी चीज़ों का एक विशेष अर्थ बताया, जिन्हें उस कहानी के मूल अर्थ से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। इसलिए, हमें उनके द्वारा इस दृष्टान्त के बताये हुए अर्थ को स्वीकार नहीं करना चाहिएः

**ईरनीआऊस नामक, एक कलीसिया के फादर** (130–200) ने इस दृष्टान्त का सार परमेश्वर और मनुष्य के रिश्ते के रूप में प्रस्तुत किया। "मनुष्य" डाकुओं के बीच में गिर गरा था, लेकिन "परमेश्वर" ने उस पर तरस खाया और उसके जख्मों पर पट्टी बांधी। दो "राजकीय सिक्के" पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों में परमेश्वर पिता और पुत्र को प्रगट करते हैं, ताकि वे उन सारी चीजों के फलवन्त बना सकें जो उन विश्वासियों के हाथों में सौंपी गयी है।

**अगस्टिन नाम, कलीसिया के फादर** ( 354–430) ने इस दृष्टान्त के द्वारा अधिक विस्तार से परमेश्वर और मनुष्य के बीच में सम्बन्ध को दर्शाने का प्रयास किया। यरूशलेम से यरीहो जाने वाला "व्यक्ति" आदम को दर्शाता है, जो वास्तव में मानव जाति को प्रगट करता है। "यरूशलेम" वह स्वर्गीय शहर है जहां से मनुष्य गिर गया है। "यरीहो" मनुष्य की नश्वरता को प्रगट करता है। "डाकू" शैतान और उसके दूतों के दिखाते हैं, जिन्होंने मनुष्य को अनश्वरता से वंचित कर दिया है। "उसके जख्म" जो उसे लगे थे वे पापों को दर्शाते हैं, जिन्हें क्षमा किया जाना जरूरी है। वह मनुष्य अधमरा छोड़ दिया गया, जो यह दर्शात है कि हालांकि उसकी आत्मा और प्राण जिन्दा है लेकिन, पाप से दूषित मनुष्य का भाग मर चुका है। "याजक और लेवी" पुराने नियम को दर्शाते हैं, जिसके लोग उद्धार तक नहीं पहुंच पाये। "सामरी" (जिस शब्द का अर्थ "रखवाला" या "संरक्षक" है) यीशु मसीह को दर्शाता है। उसके "पट्टी बांधने का" अर्थ है कि वह पापों को मिटा देता है। "तेल" उसे आशा दिलाने के प्रतीक है, जबकि "दाखरस" उसके जाशीले जज़्बे की बढ़ाई करता है। जिसे "गधे" पर लादकर उस व्यक्ति को सराय तक ले जाया गया वह यीशु की मानवीय प्रवृति को दर्शाता है जिसके तहत वह इस दुनिया में आये। "गधे पर सवार होने का अर्थ" यीशु मसीह के देहधारण पर विश्वास करना है। "सराय" कलीसिया का दर्शाती है, जहां पर यातायात का कार्यभार संभालने वाले अपने तीर्थयात्रियों को ठहराते हैं जो अपने घर अर्थात अपने स्वर्गीय यरूशलेम की ओर वापिस लौट रहे होते हैं। मनुष्य अभी भी सराय में पहुंचाये जाने की प्रक्रिया में है, क्योंकि वह अभी भी चंगा होने की प्रक्रिया में है। "प्रारम्भ में उस व्यक्ति पर तेल और दाखरस का उंडेला जाना" जो उस पर सड़क पर पड़े हुए ही डाल दिया गया था, वह बपतिस्मा को दिखाता है, और घायल को शक्ति प्रदान करता है। "अगले दिन" जब वह सामरी सराय के मालिक को दो चांदी के सिक्के देता है वह यीशु के मृतकों में से जी उठने को दर्शाता है। "इन दो चांदी के सिक्कों को" या तो परमेश्वर और अपने पड़ोसी को प्रेम करने वाली आज्ञाओं के रूप में देखा जा सकता है या फिर वर्तमान और भविष्य के लिए की गयी प्रतिज्ञाओं के रूप में। "सामरी द्वारा वापस आने की प्रतिज्ञा को" मत्ती 19:29 में यीशु द्वारा प्रतिफल के साथ लौटने की प्रतिज्ञा के रूप में देखा जाता है। "सराय का मालिक" माना जाता है कि वह प्रेरित पौलुस है।

**मार्टिन लूथर नामक एक महान कलीसियाई क्रान्तिकारी** (1483–1546) ने इस दृष्टान्त का अर्थ कुछ इस प्रकार से बतायाः "वह व्यक्ति" आदम को दर्शाता है, जो पाप में फंस गय और जिसके कारण हम सब भी पापी हो गये। "सामरी" यीशु मसीह को दर्शाता है, जो हमें बचाता है, हमें 'सराय' में लेकर जाता है, जो कलीसिया का प्रतीक है, और अब वह हमें चंगा कर रहा है।
लेकिन, एक और स्थान पर, लूथर इस दृष्टान्त का सही तरीके से इस्तेमाल करता है जब वह कहता है, "जब कोई अपने पड़ोसी को किसी जरूरत या किसी खतरे में देखत है, उसे अपने पड़ोसी को याजक और लेवी के जैसे नज़रअन्दाज करके मरने के लिए नहीं छोड़कर जाना चाहिए। सबत के दिन को पाक मानने के नाम पर, एक व्यक्ति अपने भाई की हत्या करने वाला बन सकता है।"

**रिचर्ड सी ट्रेंच ने** (1807–1886) इस दृष्टान्त का मतलब कुछ इस तरह से बतायाः "वह सराय" कलीसिया का प्रतीक, अर्थात आत्माओं को चंगा करने का स्थान है। "चांदी के दो सिक्के" सारे वरदानों और अनुग्रह को दर्शाते हैं, जिन्हें प्रभु यीशु ने जाने से पहले कलीसिया को सौंप दिया है, ताकि कलीसिया उसके पुनः आगमन तक घर की भली प्रकार से देखभाल कर सकें। वे दो सस्कारों को, वचन और संस्कार को, बाइबल में दो नियमों और चंगाई की सामर्थ्य और पापों की क्षमा को दर्शाते हैं।

### (2) निम्नलिखित उल्लेख अति आवश्यक और प्रासंगिक हैं।

यीशु ने स्वयं इस दृष्टान्त का इस्तेमाल यह समझाने के लिए किया कि वह स्वयं किस प्रकार का परमेश्वर है और वह हमें किस प्रकार के लोग बनते हुए देखना चाहता है। उसने इस दृष्टान्त के किसी एक खण्ड या भाग को कोई विशेष से नहीं जोड़ा। इसलिए हमें भी इस दृष्टान्त में पाये जाने वाले हर एक तत्व व तथ्य को एक रूपक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए ( जैसा कि उपरोक्त चार लोगों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार करने का प्रयास किया)। वह दृष्टान्त परमेश्वर की उद्धार की योजना के इतिहास के बारे में नहीं बताता है, अर्थात, पिछली शताब्दियों में परमेश्वर का मनुष्य के साथ में किस प्रकार का रिश्ता बना रहा था। वरन वह हमें जरूरत मन्द लोगों के प्रति परमेश्वर की इच्छा के बारे में बताता है, जिसे उसने हम पर प्रगट किया है। यीशु ने व्यवस्थापकों और हमें यह दिखाने के लिए इस कहानी का इस्तेमाल किया कि, वास्तव में जरूरत मन्द व्यक्ति के लिए "पड़ोसी" कौन है। और उस व्यवस्थापक ने बिल्कुल सही जवाब दिया कि, "जिस ने उस पर तरस खाया वहीं उसका पड़ोसी था"।

एक मसीही जन को कभी अपने आस पास देखकर यह नहीं पूछना चाहिए, " मेरा पड़ोसी कौन है? (मेरे लिए पड़ोसी कौन है?)" यह प्रश्न मसीही को कटघरे में लाकर खड़ा कर देता है। उसे जरूरत मन्द व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए अपने आप से प्रश्न करना चाहिएः "मैं किसके लिए एक पड़ोसी हूं?" हर एक जन जिसे परमेश्वर आपके जीवन में आने की अनुमति देता या आपके सामने लाकर रखता है वह जन हो सकता है जिसके आप पड़ोसी हो सकते हैं। "मैं किस जरूरत मन्द व्यक्ति के लिए आज एक पड़ोसी हूं?"

---

## 4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

***परिचय।*** दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग

किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

***चर्चा करें।*** इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

***ध्यान दें।***

**इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। " जब मैं किसी पर अपने प्रेम को प्रगट करता हूं तो मैं उसका पड़ोसी हूं, अर्थात, अगर मैं किसी ऐसे जरूरत मन्द की मदद करता या उस पर कृपा करता हूं जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में अद्भुत रीति से लाकर रख दिया है।"मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यीशु ने उल्ट्य उससे प्रश्न पूछ लिया : वह यह नहीं पूछता, "मेरा मित्र कौन है?" वरन "मैं किसका पड़ोसी हूं?" यदि आप आपके जीवन में परमेश्वर द्वारा रखे गये किसी व्यक्ति पर दया करते है तो आप उसस व्यक्ति के लिए पड़ोसी ठहरते हैं।**

यीशु याजकों और व्यवस्थकों का विरोधी नहीं है। उसकी मनसा याजक या लेवी के खिलाफ बोलने की नहीं थी, लेकिन वह तो केवल यह ही दिखाना चाहता था कि प्रेम और दया का अभाव हर एक जन को प्रभावित करता है, फिर चाहे वह कोई याजक हो या फिर लेवी। और वह यह शिक्षा देता है कि हर एक जन को वरन एक तुच्छ समझे जाने वाले सामरी को भी अपने जीवन में आने वाले हर जरूरतमन्द पर दया करनी चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमारे जीवन में रखा है! यीशु ने इस विचार धारा का विरोध किया कि आपका पड़ोसी आपके देश में रहने वाले या आपकी संस्कृति के लोगों या फिर आपके दल या आपके मित्रों के समूह तक ही सीमित होता है (लैवव्यवस्था 19:34; मत्ती 5:43-47)।

जरूरत मन्द व्यक्ति पर दया करना एक प्रगट प्रेम का उदारहण और परमेश्वर के राज्य की विशेषता है। यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर बलिदान किये जाने की वजह से, हर एक विश्वासी को एक मुफ्त वरदान के रूप में अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है। इसलिए परमेश्वर यह चाहते हैं कि विश्वासी जन परमेश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम प्रगट करने वाला जीवन व्यतीत करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपना आभार प्रगट करें। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि जब तक कि वे इस धरती पर जीवित हैं वे *सिद्धता* के साथ अपने परमेश्वर और अपने पड़ोसी को प्रेम नहीं कर सकते, लेकिन सैद्धान्ति तौर पर वे प्रेम की व्यवस्था(और दया) के अनुसार अपना दैनिक *जीवन जीना प्रारम्भ कर देगें।* प्रेम की व्यवस्था को कभी भी खत्म नहीं किया गया है। (रोमियों 13:8-10; 1कुरिन्थियों 9:21; 13:13; गलातियों 6:2; याकूब 2:8)।

---

## 5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

***परिचय।*** कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

***पढ़ें*** गलातियों 2:16; 3:6-9,12-14।

***खोजें और चर्चा करें।*** ये गद्यांश, दृष्टान्त में दिये गये सत्य का किस प्रकार समर्थन करते या शिक्षा देते हैं?

***ध्यान दें।***

**गलातियों 3:12।** "पर जो उन को मानेगा ( अर्थात व्यवस्था को मानेगा) वह उन के कारण जीवित रहेगा। इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति *सिद्ध* तौर पर परमेश्वर को प्रेम कर सके, उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो सकता है।

**गलातियों 2:16।** लेकिन "व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा"। इतिहास के किसी भी काल में, प्रभु यीशु को छोड़कर, किसी ने भी परमेश्वर को सिद्धता के साथ प्रेम नहीं किया है। यीशु को छोड़कर किसी और ने *सिद्ध* पड़ोसी साबित नहीं हुआ है! इस धरती पर पाये जाने वाले पापी लोगों के लिए परमेश्वर और अपने पड़ोसी के लिए इस तरह का सिद्ध प्रेम कर पाना असम्भव है (रोमियों 3:10-12, 23)

**गलातियों 3:13।** "मसीह ने हमारे लिए श्रापित बन कर, हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया।" इतिहास के किसी भी काल में कोई भी जन परमेश्वर की व्यवस्था की मांगों को पूरा नहीं कर पाया, लेकिन यीशु मसीह ने उन्हें पूरा किया। वह पूरी तरह से आज्ञाकारी रहा और अपने में परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा किया (इब्रानियों 5:8-9)। सिद्ध रूप में आज्ञाकारी होकर और प्रायश्चित के लिए अपने आप को एक विकल्प के रूप में क्रूस पर बलिदान करके, यीशु ने *हमारे बदले में* वह काम कर दिया जो हम कभी नहीं कर सकते थे (रोमियों 8:1-3; 2 कुरिन्थियों 5:21)।

**गलातियों 3:6-9।** अतः, हर एक जन जो यीशु मसीह पर *विश्वास* करता है उसके साथ परमेश्वर पूरी तरह धर्मी *जानते* और उसके साथ *वैसा ही व्यवहार करते हैं।*

इसीलिए हम मसीही लोग हमेशा इस बात को गम्भीरता के साथ अंगीकार करते हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए अपने कामों से परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा करना असम्भव है। परमेश्वर के अनुग्रह और हमारे भीतर पवित्र आत्मा के कामों के द्वारा ही, हम प्रभु यीशु मसीह और हमारे बदले में उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा *परिपूर्ण की गयी धार्मिकता* के पर भरोसा करते हैं। और हम उसे और अपने पड़ोसियों को प्रेम करने के द्वारा अपनी कृतज्ञता को प्रगट करते हैं।

---

## 6. परमेश्वर के राज्य के प्रेम के प्रगट किये जाने से सम्बन्धित दृष्टान्त की शिक्षा का सार।

***चर्चा करें।*** परमेश्वर के राज्य के प्रेम के प्रगट किये जाने से सम्बन्धित दृष्टान्त की शिक्षाएं क्या हैं?

***ध्यान दें।***

### (1) दुष्टात्मा के फिर से वापस आने का दृष्टान्त (मत्ती 12:43-45)।

यह परमेश्वर के राज्य में "प्रगट होने वाले प्रेम के बारे में" सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर का राज्य आन्तरिक रूप में बढ़ने वाले नकारात्मक धर्म या विचार धारा( मत्ती 12:24 के अनुरूप नकारात्मक आलोचनाओं और मत्ती 12:39 के अनुसार "योना के चिन्ह" की मांग करने वालों) की बजाय बाहरी तौर पर प्रगट होने वाली सकारात्मक विचारधारा है। कानूनी उदासीनता/ फरीसियों की उदासीनता की बजाय (मत्ती 12:2) यीशु मसीह का प्रगट प्रेम चंगाई, छुटकारा और उद्धार प्रदान करता है (मत्ती 12::9-14)।

प्रगट प्रेम (कहीं कुछ गलत न हो जाए से डरते हुए कुछ न करने की बजाय आगे बढ़कर जो सही है उस काम को करना) परमेश्वर के राज्य की एक अद्भुत विशेषता है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों का घर एक भरा हुआ या पहले से अधिकृत घर होता है, झाड़ बुहारा खाली घर (मत्ती 12:44) होने के बजाय सकारात्मक गतिविधियों से भरा हुआ घर होता है। ये लोग विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाये गये लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति अपने आभार को नुकसान से बचते हुए उदासीन रूप में कर्तव्य को पूरा करने की बजाय सक्रिय प्रेम और पवित्रता के द्वारा प्रगट करते हैं।

### (2) भले सामरी का दृष्टान्त(लूका 10:29-37)।

यह परमेश्वर के राज्य में "प्रगट होने वाले प्रेम के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "अगर मैं किसी पर अपना प्रेम प्रगट करता हूं तो मैं उसका पड़ोसी हूं, अर्थात, जब मैं किसी जरूरतमन्द की मदद करता हूं या उस पर दया करता हूं जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में रखा है।" वहां पर प्रश्न यह नहीं होना चाहिए, "मेरा पड़ोसी कौन है? परन्तु प्रश्न होना चाहिए कि "मैं किसका पड़ोसी हूं?"

प्रेम प्रगट करना जो जरूरतमन्द लोगों की मदद कर(ना भी हो सकता है परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषता है। क्रूस पर मसीह के बलिदान के कारण, परमेश्वर के राज्य के लोगों को निःशुल्क उपहार के रूप में अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है। इसीलिए, वे परमेश्वर और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम से भरा जीवन व्यतीत करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग परमेश्वर की महिमा के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि जब तक कि वे इस वर्तमान धरती पर जीवित हैं वे परमेश्वर और अपने पड़ोसियों को *सिद्धता* के साथ प्रेम नहीं कर सकते हैं, फिर भी वे अपने जीवन भर परमेश्वर और अपने पड़ोसियों को प्रेम करने की कोशिश करते हैं। प्रेम की व्यवस्था को पुनः स्मरण नहीं किया जाएगा(रोमियों 13:8-10)

### (3) दो कर्जदारों का दृष्टान्त (लूका 7:40-50)

यह "परमेश्वर के राज्य में प्रगट प्रेम" के बारे में शिक्षा देता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "प्रेम प्रगट किये जाने के परिणामस्वरूप व्यक्ति को क्षमा प्राप्त करने का आभास होता है। और क्षमा प्राप्त करने के आभास सुसमाचार पर विश्वास उत्पन्न होता है। जिस व्यक्ति, का ज़्यादा कर्ज़ माफ किया जाता है, वह ज़्यादा प्रेम करता है और जिसका कम क्षमा होता है वह कम प्रेम करता है।"

यीशु मसीह के प्रति प्रेम प्रगट करना परमेश्वर के राज्य की मुख्य विशेषता है। यूहन्ना 8:42 और 1यूहन्ना 5:1 की तुलना करें। परमेश्वर के राज्य के सच्चे विश्वासी लोग यीशु मसीह के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने के द्वारा अपने आभार को प्रगट करते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उनके सारे पापों को (चाहे उनकी संख्या कितनी भी थी) क्षमा कर दिया है।

यीशु ने उस महिला के क्षमा प्राप्त करने के बोध की तुलना फरीसी के क्षमा प्राप्त करने के बोध न करने से की। वह फरीसी सोचता था कि वह धर्मी है और उसे किसी तरह की क्षमा की आवश्यकता नहीं है। उसे इस बात पर विश्वास नहीं था कि वह एक पापी है और परिणाम स्वरूप उसे यह आभास नहीं था कि उसे भी क्षमा की जरूरत है। क्योंकि उसे किसी बात के लिए क्षमा नहीं मिली

थी, इसी लिए उसने किसी पर प्रेम प्रगट नहीं किया। क्योंकि उसने यीशु से कोई क्षमा नहीं प्राप्त की थी, इसीलिए उसने यीशु मसीह को प्रेम नहीं किया। लेकिन इसके विपरीत, उस स्त्री पर पाप का बोझ बहुत ज्यादा था और वह अपने पापों से पूरी तरह से क्षमा प्राप्त करना चाहती थी। और क्योंकि उसके अधिक पाप क्षमा किये गये इसीलिए उसने ज्यादा प्रेम किया। क्योकि उसने अपने अनेकों पापों को लिये यीशु मसीह से क्षमा पायी थी, इसी लिए उसने यीशु मसीह को प्रेम किया।

इस घटना में दो ऐसे लोगों के बीच में तुलना की गयी थी जिनमें से एक को पाप तो क्षमा किये गये थे और दूसरे का कोई पाप क्षमा नहीं किया गया था। जितने लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं उन सभी को पूर्ण रूप से क्षमा प्रदान की जाती है। लेकिन जैस जैसे मसीही जन आत्मिक रूप में बढ़ता चला जाता है और वह इस बात को समझ पाता है कि उसका मानवीय स्वभाव कितना पाप से भरा हुआ है और वास्तव में यीशु मसीह ने उनके बदले में क्या किया है, उतना ही ज़्यादा उनका प्रेम यीशु मसीह के लिए बढ़ता है।

### (4) परमेश्वर कैसा है।

सभी लोगों, वरन् खास तौर पर भटके हुए लोगों के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे है। इन दृष्टान्तों की एक महान शिक्षा यह है कि वे चंगाई और छुटकारा चाहने वाले जरूरतमन्दों के प्रति यीशु मसीह में होकर परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करते हैं। वह लोगों को दुष्टात्माओं से आज़ाद करता, उनकी बीमारियों को चंगा करता है, उनके पापों को क्षमा करता है, और वह हमेशा जरूरत मन्द लोगों की मदद करने के लिए तैयार रहता है। मत्ती ने यीशु के बारे में लिखा, “जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे(मत्ती 9:36)।”

### (5) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

म्सीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें कैसा होना है। इन दृष्टान्तों से हमें एक और शिक्षा यह मिलती है कि परमेश्वर हमें किस प्रकार के व्यक्ति बनते देखना और कैसे काम करवाना चाहते हैं। “प्रगट प्रेम” वह भाव है जो हम परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त उद्धार के प्रति आभार प्रगट करते हुए दिखाते हैं। हमें जोखिम रहित उदासीन प्रेम के बदले, दूसरों पर सक्रिय अर्थात कामों के द्वारा प्रेम प्रगट करना चाहिए। यीशु मसीह के प्रति उदासीनता दिखाने की बजाय, हमें उसके प्रति अपना प्रेम उण्डेल देना चाहिए। हमें व्यवस्था का पालन करते हुए अपनी झूठी धार्मिकता को बचाये रखने की बजाय, परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम और लोगों के प्रति अपनी दया को प्रगट करना चाहिए। एक मसीही होने के नाते हमारा छुटकारा हुआ है हम बच गये है, इसलिए हम ऐसा करने के योग्य है क्योंकि हम अपने उस उद्धार के लिए (क्षमा, चंगाई, बहाली इत्यादि) आभारी है, जिसे हमने विश्वास करने पर प्राप्त किया है।

| | | |
|---|---|---|
| **5** | **प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना** | |

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

| 6 | **तैयारी** (2 मिनट) | ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए** |
|---|---|---|

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **"भले सामरी"** के दृष्टान्त का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 23,24,25, और 27** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(7) रोमियों 5:1-2अ।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 5:12-21।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।